पाठ - 1

الدرس الأول - هندي

तौहीद (एकेश्वरवाद) और उसके प्रकार

التوحيد و أنواعه

तौहीद (एकेश्वरवाद) किसे कहते हैं ? एकेश्वरवाद यह है कि अल्लाह ने जिन चीज़ों को अपने लिए विशेष कर रखा है और इबादत (उपासना) के जिन तरीक़ों को अपने लिए अनिवार्य कर दिया है उन तमाम चिजों में हम उसे एक जानें। अल्लाह के तमाम आदेशों में एकेश्वरवाद सबसे प्रमुख आदेश है अल्लाह तआला फ़रमाता है कि ऐ नबी आप कह दीजिए कि वह अल्लाह एक है और फ़रमाया : मैने ने इंसानों और जिन्नातों को केवल अपनी इबादत के लिए पैदा किया है (सुरतुज्जारियात 56) और फ़रमाया : यानी, अल्लाह की इबादत करो और उसके साथ किसी को साझेदार मत बनाओ (सुरतुन्निसा 36) एकेश्वरवाद को तीन भाग में विभाजित किया जा सकता है : **1.** तौहीदे रुबूबियत **2.** तौहीदे उलूहियत **3.** तौहीदे अस्मा व सिफ़ात

1. तौहीदे रुबूबियत अर्थात : सृष्टि की रचना और उसकी व्यवस्था के मामलों में अल्लाह को एक जानें और यह आस्था रखें कि अल्लाह ही रोज़ी देने वाला, ज़िन्दा करने वाला और मारने वाला है उसी के हाथ में आसमानों और ज़मीनों की बादशाहत है : अल्लाह तआला फ़रमाता है: अर्थात : क्या अल्लाह के अतिरिक्त और कोई भी रचयता है जो तूम्हें आकाश व धरति से रोज़ी पहुंचाए? अल्लाह के सिवा कोई वास्तविक पूज्य नहीं। अतः तुम कहां उलटे जाते हो। (सूरह फ़ातिर 3)अल्लाह तआला एक दूसरी जगह फरमाता है : अर्थात : बहुत बरकत वाला है वह (अल्लाह) जिसके हाथ में बादशाहत है और जो हर चीज़ का सामर्थ्य रखता है। (सूरह अल मुल्क, आयत 1)

अल्लाह की बादशाहत में सृष्टि की प्रत्येक चीज़ शामिल है, और वह उसे जिस तरह से चाहता है, प्रयोग में लाता है रहा सृष्टि की व्यवस्था के मामले में अल्लाह को एक मानना, तो सृष्टि के संचालन के सिलसिले में अल्लाह का कोई साझेदार नहीं। अल्लाह का सासन सम्पूर्ण सृष्टि पर चलता है अल्लाह तआला एक दूसरी जगह फरमाता है : याद रखो अल्लाह ही के लिए ख़ास है पैदा करना, और हाकिम होना, बड़ी बरकत वाला है अल्लाह जो सम्पूर्ण संसार का पालनकर्ता है। (सूरह अल आराफ, आयत 54)
एकेश्वरवाद के इस भाग का इन्कार शायद ही कोई व्यक्ति करता है। और जिसने इन्कार किया है उसने भी ज़ाहिर में तो इन्कार किया है लेकिन उसका दिल इस बात को स्वीकार कर चुका है जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है

यानी, उन्होंने इन्कार कर दिया अत्याचार और घमण्ड की बुनियाद पर उनके दिल तो यक़ीन कर चुके थे,(सुरह अल.नमल, 14) लेकिन एकेश्वरवाद के इस स्वरुप को स्वीकार कर लेना ही हितकारी और काफी नहीं होगा, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग में मुश्रिकों और काफ़िरों का इस बात को स्वीकार कर लेना उनके हक़ में लाभदायक नहीं हुआ। अल्लाह ने उनके बारे में फ़रमाया अर्थात : यदि आप उनसे पूछें कि ज़मीन और आसमान का सृष्टिकर्ता और सूरज और चाँद को काम में लगाने वाला कौन है ? तो उनका जवाब यही होगा कि अल्लाह तआला, फ़िर किधर उलटे जा रहे हैं। (सूरहतुल अंकबूत, आयत – 61) इसि लिए तौहीद के दोसरे भगों पर भी ईमान रखना अनिवार्य है।